

राजस्व लोक अदालत अभियान,
न्याय आपके के द्वार, 2017
न्यायालय अतिरिक्त जिला दण्डनायक, सवाईमाधोपुर
पीठासीन अधिकारी—श्री भगवत सिंह देवल

11/12

तारीख रजू 25/06/2012

राजस्थान सरकार जरिये पुलिस अधीक्षक, सवाईमाधोपुर।

—सायल(प्रार्थी)

बनाम

श्री सतेन्द्र सिंह उर्फ सत्तू पुत्र भगवत सिंह जाति जाट उम्र 35 साल निवासी वजीरपुर थाना
वजीरपुर जिला सवाई माधोपुर।

—गैर सायल(अप्रार्थी)

अभियोग-पत्र अन्तर्गत धारा 3 राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम, 1975

निर्णय

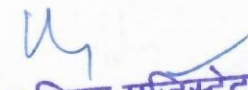
दिनांक-

26/5/12

पुलिस अधीक्षक, सवाईमाधोपुर द्वारा यह अभियोग पत्र राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अन्तर्गत गैर सायल(अप्रार्थी) श्री सतेन्द्र सिंह उर्फ सत्तू पुत्र भगवत सिंह जाति जाट उम्र 35 साल निवासी वजीरपुर थाना वजीरपुर जिला सवाई माधोपुर के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। अभियोग पत्र के अनुसार गैरसायल(अप्रार्थी) के विरुद्ध पुलिस थाना वजीरपुर जिला सवाई माधोपुर जिला सवाईमाधोपुर में निम्न अभियोग पंजीवद्ध होना बताया है।

क्र.सं.	मुकदमा नम्बर	दिनांक	धारा	फैसला
1	11/2000	16/01/2000	13 आरपीजीओ	25 रु० के अर्थदण्ड से दण्डित
2	38/2000	14/03/2000	13 आरपीजीओ	25 रु० के अर्थदण्ड से दण्डित
3	48/04	12/03/2004	13 आरपीजीओ	50 रु० के अर्थदण्ड से दण्डित

उक्त पंजीवद्ध आपराधिक प्रकरणों में बाद जाँच चार्जशीट किता कर संबंधित न्यायालय में चालान पेश किया गया। सक्षम न्यायालय द्वारा गैरसायल को उक्त प्रकरणों में दोषी मानते हुए अर्थदण्ड की सजा से दण्डित किया है। गैरसायल शराब पीने व जुआ, सट्टा के कार्य करने का आदि है। उक्त शक्स का कस्बे में काफी आंतक है तथा आये दिन जुआ, सट्टा खेलना आम बात है। चूंकि कस्बा में जाट समुदाय की काफी आबादी है, इसलिए इसके विरुद्ध आम नागरिक की शिकायत करने तक की हिम्मत नहीं होती है।


अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट
सवाई माधोपुर

गैर सायल को आदतन अपराधी मानते हुए राजस्थान गुण्डा एक्ट की धारा 2 के तहत गुण्डा घोषित कराया जाकर धारा 3 के तहत उसके विरुद्ध विविध कार्यवाही की जावे।

अभियोग पत्र के साथ तालिका में अंकित प्रथम सूचना रिपोर्ट, चार्जशीट प्रति, न्यायालय निर्णय प्रतियां प्रस्तुत की है।

अभियोग पत्र प्रस्तुत होने पर दर्ज रजिस्टर किया जाकर गैरसायल को राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम, 1975 के नियम-4 में उल्लेखानुसार राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अन्तर्गत नोटिस जारी किया गया। गैरसायल जरिये अभिभाषक व असालतन उपस्थित आया। श्री सतेन्द्र सिंह उर्फ सतू पुत्र भगवत सिंह जाति जाट उम्र 35 साल निवासी वजीरपुर थाना वजीरपुर द्वारा अभियोग पत्र में लगाये आरोपो का खण्डन करते हुए जवाब पेश किया। अभियोजन पक्ष की ओर से साक्ष्य में श्री बन्नु सिंह हाल सेवा निवृत्त एसआई के बयान करवाये।

न्याय आपके द्वार के तहत सुलह समझौते की भावन से यह प्रकरण आज न्यायालय में प्रस्तुत हुआ है। सायल की ओर से अभियोजन अधिकारी उपस्थित एवं वकील गैरसायल उप0 सुलह समझौते के तहत अन्य पक्ष को सुना गया।

अभियोजन अधिकारी ने बहस में तर्क दिया कि गैरसायल को सक्षम न्यायालय द्वारा उक्त प्रकरणों में अर्द्धदण्ड से दण्डित किया गया है। गैरसायल शराब पीने व जुआ, सट्टा के कार्य करने का आदि है। उक्त शराब का कच्चे में काफी आंतक है तथा आये दिन जुआ, सट्टा खेलना आम बात है। चूंकि कस्बा में जाट समुदाय की काफी आबादी है, इसलिए इसके विरुद्ध आम नागरिक की शिकायत करने तक की हिम्मत नहीं होती है। अतः उक्त गैर सायल को आदतन अपराधी मानते हुए राजस्थान गुण्डा एक्ट की धारा 2 के तहत गुण्डा घोषित कराया जाकर धारा 3 के तहत उसके विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जावे।

विद्वान वकील गैर सायल ने जवाब में अंकित तथ्यों का हवाला देते हुए बहस में तर्क दिया कि पुलिस ने गलत तथ्यों के आधार पर गैर सायल के विरुद्ध इस्तगसा पेश किया है जो झूठ किये जाने योग्य है। सायल ने उक्त इस्तगसा राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम 1975 की धारा 3 के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है। जबकि राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम 1975 की धारा 3 में स्पष्ट प्रावधान है कि

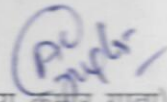

अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट
सवाई माधोपुर

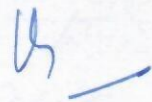
द्वारा इस्तगासा पेश करने से पूर्व छः माह की अवधि में गैरसायल द्वारा तीन बार अपराध कारित करने हुए पाया जाना आवश्यक है। जबकि सायल द्वारा इस्तगासा पेश करने से पूर्व गैरसायल द्वारा छः माह के भीतर अपराध कारित करने हुए नहीं पाया गया है, साथ ही उक्त इस्तगासा पेश करने की मियाद छः माह है। सायल को इस्तगासा पेश अन्तिम अपराध करने के छः माह के भीतर-भीतर पेश करना आवश्यक है। लेकिन सायल द्वारा उक्त इस्तगासा आठ साल पश्चात पेश किया है। अतः उक्त इस्तगासा प्रारम्भ से ही न्यून है, साथ ही वकील गैरसायल ने गैरसायल खिलाफ प्रस्तुत किये गये अभियोग पत्र में कार्यवाही प्रारम्भ करने हेतु निवेदन किया है।

अभियोजन अधिकारी व विद्वान वकील गैर सायल की बहस सुनने व मनन करने तथा अभियोग पत्र में उल्लेखित दस्तावेजात व साक्ष्य का भली भांती अवलोकन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम की धारा 3 के अन्तर्गत धारा 3 के अधीन कार्यवाही प्रारम्भ करने के तुरन्त छह माह की अवधि में इस्तगासा पेश करना आवश्यक है। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा रामाराम बनाम राजस्थान राज्य में भी प्रत्यार्थी द्वारा निर्देशित कोई प्रथम सूचना रिपोर्ट, नोटिस जारी करने के तुरन्त पूर्व छः माह की अवधि के भीतर की नहीं होने पर अपीलार्थी को गुण्डा नहीं माना है। इस प्रकार प्रकरण दर्ज होने से पूर्व छः माह की अवधि में गैरसायल के विरुद्ध कोई मुकदमा दर्ज होना नहीं पाये जाने के कारण गैरसायल गुण्डा की श्रेणी में नहीं माना जा सकता है।

अतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर सायल द्वारा गैरसायल के खिलाफ प्रस्तुत किया गया अभियोग पत्र अस्वीकार किया जाकर गैरसायल के खिलाफ राजस्थान गुण्डा नियंत्रण अधिनियम की धारा 75 की कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है।

निर्णय आज दिनांक 26/05/2017 को राजस्व लोक अदालत अभियान न्याय आपके द्वार, 2017 में लिखा जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया।


(अभय कुमार गुप्ता)
सदस्य


(भगवत सिंह देवल)
अतिरिक्त जिला कलेक्टर,
सवाईमाधोपुर